National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2016; 1(5): 22-23
© 2016 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ. सरोज गुप्ता
एसोशिएट प्रोफेसर,
सत्यवती महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली

Correspondence:
डॉ. सरोज गुप्ता
एसोशिएट प्रोफेसर,
सत्यवती महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली

स्त्री शक्ति रूप में

डॉ. सरोज गुप्ता

पुराण के अध्ययन से तत्कालीन समाज में स्त्री की तीनों रूपों में स्थिति स्पष्ट होती है। कन्या के रूप में पर्याप्त आदर था। वह परिवार के सभी सदस्यों के लिए स्नेह की पात्र थी। वैवाहिक जीवन प्राप्त करने के लिए वह अपने माता-पिता पर निर्भर थी। वह स्वयं भी अपने पति का चयन कर लेती थी। परंतु अंतिम रूप से उसे अपने माता-पिता की सहमति प्राप्ति करनी होती थी। संतानोत्पत्ति के पश्चात् उसका कर्तव्य था कि वह बच्चों की देखभाल करे। विधवा के रूप में उसे पुत्रों तथा ससुराल के अन्य लोगों पर आश्रित रहना पड़ता था। इस प्रकार स्त्री का संपूर्ण जीवन दूसरों पर था। बाल्यकाल में माता-पिता उसके संरक्षक थे तो विवाह के पश्चात् उसका पति उसकी देखभाल करता था। यदि कहीं पति की मृत्यु हो जाती थी तो पुत्र उसकी देखभाल किया करते थे।

भारत में भी 'देवी पूजा' वैदिक काल से पूर्व ही विद्यमान थी। माँ के प्रति मनुष्य की श्रद्धा तथा प्रेम से मातृ पूजा का उदय हुआ। पूर्व वैदिक काल में समाज मातृ प्रधान था। संभवतः इसी कारण वेदों को सर्वप्रथम **'मातृ देवो भव'** तथा बाद में **'पितृ देवो भव'** का संदेश पड़ा। ऋग्वेद में भी वाक् नान्नी देवी का वर्णन मिलता है।

पुराण साहित्य में भी 'शक्ति' या 'माया' का वर्णन किया गया जिसके संपर्क से विष्णु तथा शिव भी उच्च देवता बन गए। इसके साथ ही शक्ति तथा शक्तिमान के नए विचार का उदय हुआ। शक्ति के विभिन्न रूप बन गए। पूर्व काल में शैव साहित्य के अंतर्गत 'शक्ति'-धारक से अधिक महत्त्व शक्ति को मिलने लगा। पूर्व काल में शैव साहित्य के अंतर्गत 'शक्ति' शिव की पत्नी मानी जाती थी। परन्तु शाक्त संप्रदाय तथा तांत्रिकों के अनुसार शक्ति को सर्वोच्चपद प्राप्त हो गया। स्त्री देवता होने के कारण शक्ति को देवी कहा जाने लगा। इसके चारों तरफ भी कथाओं का जाल बुना तथा इसको 'भग' नामक सर्वोच्च शक्ति से भूषित किया गया। इसीलिए वह 'भगवती' भी कहलाने लगी।

देवी की सात्विकी, राजसी तथा तामसी नाम की तीन शक्तियां क्रमशः देवी के महालक्ष्मी, सरस्वती तथा महाकाली इन तीनों रूपों में विद्यमान होती है। ब्रह्म में सात्विकी शक्ति ये विष्णु में राजसी तथा शिव में तामसी शक्ति का संबंध रहता है। इन्हीं की सहायता से ये देवता क्रमशः सृष्टि की उत्पत्ति, पालन तथा संहार करते हैं।

सृष्टि के आरंभ में देवी सत, चित्त, आनंद स्वरूप भगवती के रूप में विहार करती हैं। फिर सगुण रूप धारण करके अपनी स्वतः आविर्भूत योग-माया से भुवन रचना करती हैं। उसके पश्चात् ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश को उत्पन्न करके उनकी कर्तृत्व शक्ति प्रदान करती है। देवी

भागवतकार ने देवी को 'माता' के रूप में चित्रित किया है। जिस प्रकार माता सर्वदा अपने बच्चों के लिए हृदय से कल्याण-भाव रखती है, उसी प्रकार देवी भी अपने भक्तों के प्रति वैसा ही भाव रखती है।

माता के रूप में नारी के प्रति श्रद्धा प्रकट की गई, पत्नी के रूप में उसे कहीं सहधर्मिणी का पद दिया गया तो कहीं उसे केवल दासी के समान समझा गया। समाज में स्त्री को कन्या के रूप में भी प्रेम की दृष्टि से ही देखा जाता था। परिवार में जितनी प्रसन्नता पुत्र-जन्म पर होती थी, उतनी कन्या-जन्म पर नहीं होती थी। इसका अर्थ यह नहीं कि कन्या-जन्म से घर में निराशा उत्पन्न होती थी। तत्कालीन समाज में कन्याओं को गोद भी लिया जाता था।

विवाह कन्या के लिए आवश्यक माना जाता था। कन्या को अपना पति चुनने की पूरी स्वतंत्रता थी। परन्तु उसमें माता-पिता की सहमति की भी आवश्यकता होती थी। नारी के लिए घर ही सारी क्रियाओं का केन्द्र था। वास्तव में घर ही नारी का पर्याय था। पत्नी का पति की सेवा करना ही धर्म माना जाता था। पति ही पत्नी का देवता, गुरु तथा भगवान माना जाता था।

माता के रूप में नारी का समाज में बहुत आदर था। वह जननी, पालक तथा शिक्षक मानी जाती थी। तत्कालीन समाज में माता अपना पूरा कर्त्तव्य निभाती थी। पुत्र भी माता की प्रत्येक आज्ञा का पालन करता था।

तत्कालीन समाज में स्त्री की स्थिति का ह्रास हुआ था। साधारण नारी की पराधीनता और परवशता इस काल में निरंतर बढ़ती जा रही थी। बाल-विवाह का प्रचार तथा विधवा-विवाह का निषेध सर्वत्र किया जा रहा था। इस समय यह सिद्धान्त सर्वमान्य हुआ कि नारी सदैव परतंत्र रहनी चाहिए। स्त्री पति की सहधर्मिणी न होकर उसकी दासी बन गई थी। पतिव्रत धर्म ही स्त्री का एकमात्र धर्म रह गया था। अबला समझी जाने लगी थी। युद्ध में शस्त्र उठाना स्त्री का कार्य नहीं समझा जाता था।

परन्तु दूसरी ओर देवी भागवतकार ने नारी को एक अन्य रूप ही प्रदान किया। देवी ने बड़े-बड़े राक्षसों का वध किया। अपने भक्तों की इच्छा पूर्ण करने के लिए देवी के अवतार भी लेने पड़े। देवी अबला न होकर एक शक्तिशाली नारी थी, जिसने बलशाली पुरुषों के भी दांत खट्टे कर दिये थे।

तत्कालीन समाज में परिवार पितृ-प्रधान होते थे। पुत्र को ही पिता की संपत्ति का उत्तराधिकारी माना जाता था। पति कापद पत्नी से वरिष्ठ होता था। पत्नी अपने पति की प्रत्येक आज्ञा का पालन करती थी। पति का कर्त्तव्य भी अपनी पत्नी की देखभाल करना तथा उसे प्रसन्न रखना होता था। जिसकी पत्नी दुखी होती थी, उसके जीवन को धिक्कारा जाता था। पत्नियां पति का मार्गदर्शन करती थीं। कठिनाइयों में उसका उत्साह बढ़ाती थी। राजा हरिशचन्द्र पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा तो उनकी पत्नी ने उनकी चिंता का अंत किया और उन्हें सत्य का मार्ग ग्रहण किए रहने के लिए उत्साहित किया। विषम स्थिति उत्पन्न होने पर पत्नी अपने पति की सहायतार्थ बिक जाने के लिए भी उद्यत रहती थी। रानी शैव्या ने अपने पति राजा हरिशचन्द्र के प्रण की रक्षार्थ स्वयं को एक चाण्डाल के हाथों बेच दिया था। उसके घर रानी शैव्या ने दासियों के समानजीवन व्यतीत किया। पत्नी वास्तविक अर्थ में पति की सहधर्मिणी थी। वह अपने पति का दुःख-सुख बाँट लेती थी। प्राचीन काल में पत्नी को सहधर्मिणी की दृष्टि से ही देखा जाता था। कालांतर में सहधर्मिणी की अवधारणा पतिव्रता की अवधारणा में परिणत हो गयी। तत्कालीन समाज में पत्नी के इसी रूप को अधिक महत्त्व दिया जाता था। पत्नी का व्यक्तिगत पति के व्यक्तित्व में डूब गया था। यह उसका दुर्भाग्य था और इसी कारण वह दुःखी भी थी- ***'पतिचित्ताऽनुवर्तित्वं दुःखाद्दुःखतरं स्मृतम्'।***

वास्तव में किसी देश की उन्नति के लिए नारी को आदर प्रदान करना आवश्यक है। स्त्री और पुरुष एक-दूसरे के पूरक हैं। स्त्री ही पुरुष की जननी है। देश का भविष्य स्त्रियों पर ही निर्भर करता है। देवी भागवतकार स्त्री की पतिव्रता होने को तो महत्त्व देता है परन्तु दासी की तरह कार्य करने को महत्त्व नहीं देता। पुरुष को कोई अधिकार नहीं कि वह स्त्री पर अपना व्यर्थ प्रभुत्व जमाए। परतंत्र स्त्री की संतान के व्यक्तित्व का विकास भी बहुमुखी नहीं हो सकता - 'Slave Mothers Produce Craven Children' इसलिए देवी भागवतकार ने भी देवी के रूप में नारी का चित्रण करके उसे आदर्श रूप प्रदान किया है।